राजा प्रदेशी और केशीकुमार श्रमण

प्राचीनकाल में आमलकप्पा नामक सुन्दर नगरी थी। विहार करते हुए भगवान महावीर वहाँ पधारे। नगर के बाहर हजारों आम के वृक्षों वाला 'आम्रशाल वन' (बगीचा) था। वहीं पर भगवान का समवसरण लगा। नगर का 'संघ' राजा-रानी और हजारों नागरिक आकर भगवान की देशना सुनने लगे।

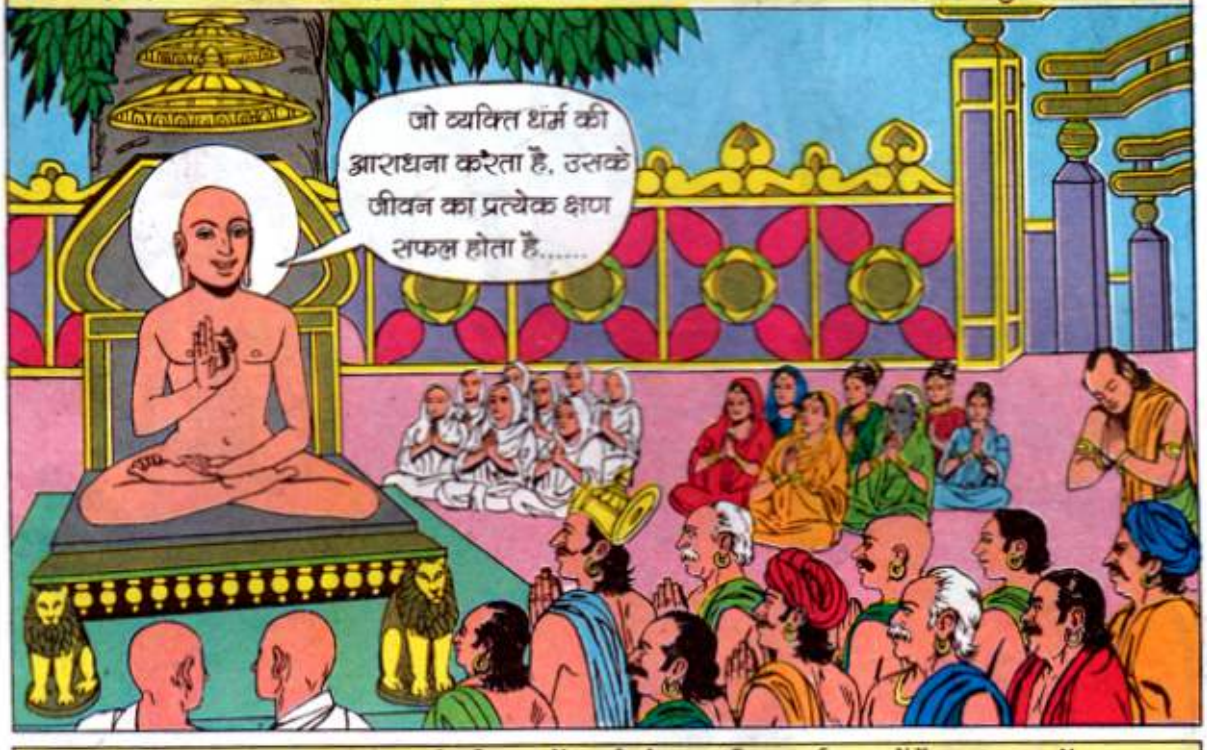

उसी समय सौधर्म नामक स्वर्ग के सूर्याभ विमान में सूर्याभदेव अपनी सुधर्मा सभा में बैठा अप्सराओं का नृत्य-गायन का आनन्द ले रहा था।

अचानक उसका ध्यान भरतक्षेत्र की तरफ गया। उसने आम्रशाल वन में समवसरण में विराजमान भगवान महावीर को देखा। सूर्याभदेव का हृदय भक्ति रस से गद्‌गद् हो गया। उसने तुरन्त सिंहासन से उतरकर भगवान को वन्दना की—

हे धर्म की अति करने वाले लोक पूज्य प्रभु मैं आपको वन्दना करता हूँ। आप तो सर्वज्ञ हैं, वहाँ रहे आप मुझे यहाँ देख रहे हैं।

पुनः सिंहासन पर बैठकर सूर्याभ देव ने अपने आभियोगिक देवों से कहा—

हम पृथ्वी पर आमलकप्पा नगरी में विराजमान श्रमण भगवान महावीर के दर्शन करने जावेंगे। तैयारी करो।

देवों ने तुरन्त विमान सजाया—

स्वामी ! भगवान महावीर के दर्शन हेतु पृथ्वी पर जाने के लिए विमान तैयार है।

विमान में बैठकर अपने देव परिवार के साथ सूर्याभदेव भगवान महावीर की धर्म सभा में आया। अत्यन्त भक्ति भाव के साथ उसने भगवान महावीर को वन्दना कर अपना परिचय दिया—

प्रभो ! मैं सूर्याभदेव आपको वन्दना करता हूँ।

फिर वह यथा स्थान बैठ गया।

धर्म देशना सुनने के पश्चात् सूर्याभदेव ने प्रभु से पूछा—

भन्ते ! क्या मैं भव्य हूँ ? मोक्ष प्राप्त करने योग्य हूँ या नहीं ?

देव ! तुमने पूर्व जन्म में धर्म की सम्यक् आराधना की है। आगामी जन्म में भी तुम धर्म की सम्यक् आराधना करोगे।

सूर्याभदेव अत्यन्त प्रसन्न हुआ और उसने तीन बार प्रदक्षिणा कर वन्दना की। फिर उसने भगवान से कहा—

प्रभो ! जिस धर्म-साधना के फलस्वरूप मैंने यह दिव्य ऋद्धि प्राप्त की है, उसका कुछ प्रदर्शन यहाँ करना चाहता हूँ।

प्रभु मौन रहे।